|  |
| --- |
| 21. September |
| **Fest des heiligen Matthäus, Apostel und Evangelist** |
| Lesung: Eph 4,1-7.11-13; Evangelium: Mt 9,9-13 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 546, 1-4 | Christus, du Licht vom wahren Licht |
|  | GL 775, 1-3 | König ist der Herr |
|  | GL 481, 1+4+5 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 154 | Kyrie |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm Ps 19, 2-5 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 386 | Laudate omnes gentes |
|  | GL 454 | Geht in alle Welt |
|  | oder Psalmenlied: |  |
|  | GL 381, 1+2 | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Dich, Gott, loben wir, dich, Herr, preisen wir;* |
|  | *dich lobt der glorreiche Chor der Apostel.* |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 461, 1+2 | Mir nach |
|  | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 204 | Christe, du Lamm Gottes |
|  | GL 498, 2 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 209, 1-4 | Du teilst es aus |
|  | GL 380, 1+4 | Großer Gott |
|  | GL 478, 1-5 | Nun singe Lob |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes allzugleich |
|  | GL 478, 3+4 | Die Kirche ist erbauet |
|  |  |  |
|  |  |  |